भगत बेणी - सबद ३

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥

रागु प्रभाती, भगत बेणी, गुरु ग्रंथ साहिब, १३५१

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥
रिद अंतरि कर तल काती ॥
ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥
देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥
कलि भगवत बंद चिरांमं ॥
क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥१॥ रहाउ ॥
नितप्रति इसनानु सरीरं ॥
दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥
रिदै छुरी संधिआनी ॥
पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥
सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥
निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥
पग नाचसि चितु अक्रमं ॥
ए ल्मपट नाच अधरमं ॥३॥
म्रिग आसणु तुलसी माला ॥
कर ऊजल तिलकु कपाला ॥
रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥
रे ल्मपट क्रिसनु अभाखं ॥४॥
जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥
सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥

सार: जब बाहरी दिखावा अंदरूनी विरोधाभासों को छिपाने लगता है तब मन में घबराहट सी होती है। पवित्र प्रतीक और रीति-रिवाज भले ही पवित्रता का आभास दें लेकिन जिस जागरूकता को जगाने के लिए वह बने हैं, उस पर शायद कोई असर न हो। असली तनाव बाहरी दिखावे और अंतरात्मा के बीच होता है जहाँ श्रद्धा बस दिखावटी ही रह जाती है लेकिन करुणा और असल बदलाव कहीं खो जाते हैं। सच्ची पवित्रता तब आती है जब प्रतीकों को हम अपनी समझ का हिस्सा बना लेते हैं जिससे हमारी जागरूकता का तालमेल जीवन के आपसी जुड़ाव से बैठ जाता है। इस बदलाव में, पवित्रता दुनिया के सामने पेश की जाने वाली केवल एक छवि नहीं रह जाती बल्कि अंतरात्मा का ऐसा निखार बन जाती है जो हमारी उपस्थिति, संवेदनशीलता और नैतिक व्यवहार से झलकता है, ऐसी स्थिति जहाँ जागरूकता चुपचाप अपने ही सच के साथ फिर से जुड़ सकती है।

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥

शरीर पर चंदन का लेप लगाया जाता है और माथे पर तुलसी के पत्ते रखे जाते हैं। यह रस्म पवित्रता और श्रद्धा के बाहरी दिखावे को दर्शाती है।

रिद अंतरि कर तल काती ॥

लेकिन दिल में खंजर छिपा होता है। यह उस छिपी हुई नकारात्मकता और कपटी इरादे का प्रतीक है जो बाहर से शांत दिखने वाले व्यवहार के अंदर छिपा हो सकता है।

ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥

धोखेबाज़ का इरादा बगुले जैसा होता है जो ध्यान की मुद्रा में होने का दिखावा करता है। यह दोहरेपन को दर्शाता है जिसमें शांति का दिखावा एक चालाक और धूर्त आंतरिक स्वभाव को छिपाए रखता है।

देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥
बाहर से तो भक्तिपूर्ण लग सकता है लेकिन इसका असली सार खोखले शब्दों में खो जाता है। यह दिखाता है कि आध्यात्मिक पहचान का बाहरी दिखावा करने के साथ-साथ ढोंग, खोखले शब्द और उलझा अहं आंतरिक जागरूकता को कमज़ोर कर देते हैं। (१)

कलि भगवत बंद चिरांमं ॥
मुश्किल समय में, भक्त लंबे समय तक पूजा-अर्चना करते हैं। इससे पता चलता है कि भक्ति प्यार और बिना शर्त जुड़ाव पर आधारित होने के बजाय मशीनी, व्यावसायिक लेन-देन की हो जाती है।

क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥१॥ रहाउ ॥
बुरी नीयत में निरंतर डूबे रहने के कारण, वह अंततः नष्ट हो जाते हैं। इससे यह समझ मिलती है कि जब मन विकृत होता है और अहं अपना आंतरिक संघर्ष जारी रखता है तब इससे आध्यात्मिकता का अंत हो जाता है। (१)(विराम)

नितप्रति इसनानु सरीरं ॥
प्रतिदिन शरीर की सफाई की जाती है। यह अभ्यास शारीरिक स्तर पर अनुशासन को दर्शाता है।

दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥
भीतरी और बाहरी वस्त्र पहनना, अनुष्ठानों में भाग लेना और चावल की खीर का आनंद लेना। यह धार्मिक समारोहों, प्रथाओं, दिनचर्या और बाहरी अनुशासन की ओर इशारा करता है जो पवित्र लग सकते हैं।

रिदै छुरी संधिआनी ॥
मन के भीतर, चाकू हमेशा तैयार रहता है। यह पवित्र क्षणों में भी बनी रहने वाली आंतरिक आक्रामकता को दर्शाता है, बाहर से पवित्रता का दिखावा करना लेकिन भीतर क्रूरता, हिसाब और दूसरों को भीतर से आहत करने की तत्परता को छिपाए रखना।

पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥

दूसरों की संपत्ति चुराना एक आदत बन जाती है। यह शोषणकारी मानसिकता की ओर इशारा करता है जो सम्मानजनक, आध्यात्मिक या हानिरहित दिखते हुए दूसरों का लाभ उठाना चाहती है। (२)

सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥

पत्थरों, प्रतीकों और देवताओं की पूजा की जाती है। यह संरचित धार्मिक प्रदर्शन का प्रतिनिधित्व करता है जो बाहर से सार्थक लग सकता है फिर भी आंतरिक स्वयं अछूता और खाली रह सकता है।

निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥

रातें जागते हुए बिताई जाती हैं, मानो भक्ति जगाने के लिए। यह इस विश्वास को दर्शाता है कि हम धार्मिक गतिविधियों में गहन रूप से भाग लेते हुए भी बिना बदले रह सकते हैं।

पग नाचसि चितु अक्रमं ॥

भक्ति प्रदर्शन में पैर बाहर से नाचते हैं लेकिन मन हानिकारक प्रवृत्तियों में डूबा रहता है। यह ऐसी गति का प्रतीक है जिसमें धार्मिक अभिव्यक्ति का प्रदर्शन किया जाता है जबकि आंतरिक स्वयं गुणों से अछूता रहता है।

ए ल्मपट नाच अधरमं ॥३॥

ऐसा दिखावटी प्रदर्शन अधर्मी हो जाता है। यह दिखावा उजागर करता है कि जिन कार्यों में सच्ची ईमानदारी का अभाव होता है वह सत्य से कटे हुए होते हैं। (३)

म्रिग आसणु तुलसी माला ॥

हिरण की खाल का आसन और तुलसी की माला। मरे हुए जानवर और मृत पौधे से बनी यह धार्मिक चीज़ें नश्वरता का प्रतीक हैं, अपने क्षणभंगुर अस्तित्व को भूलने से हम उसको नज़रअंदाज़ कर सकते हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण है।

कर ऊजल तिलकु कपाला ॥

साफ़ हाथों से माथे पर पवित्र तिलक लगाया जाता है। यह ऐसे मन को दर्शाता है जो भीतरी विचारों की शुद्धता के बजाय बाहरी पवित्रता को ज़्यादा महत्व देता है।

रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥

गले में पवित्र मालाएँ होने पर भी मन में झूठ छिपा होता है। यह बाहरी दिखावे और आंतरिक सच्चाई के बीच के विरोधाभास को दर्शाता है।

रेल्मपट क्रिसनु अभाखं ॥४॥

ज़हरीले इंसान, तुम उस सर्वव्यापी चेतना के बारे में चुप रहते हो। यह ऐसी स्थिति को उजागर करता है जहाँ प्रतीक, रीति-रिवाज, अज्ञानता और बुरी नीयत जीवन के सार की समझ पर हावी हो जाते हैं। (४)

जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥

जिन्होंने आत्मा के सार को नहीं पहचाना। यह आत्म-चिंतन और आंतरिक बोध की कमी को दर्शाता है।

सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥

उनके सभी धार्मिक कार्य खोखले और अधूरे रह जाते हैं। यह सदाचार के बिना धार्मिक अभ्यास के खोखलेपन को दर्शाता है।

कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥

बेनी कहते हैं कि जो ज्ञान की ओर उन्मुख हैं, वह चिंतन करते हैं। यह बाहरी दिखावे से आंतरिक ध्यान की ओर बदलाव का संकेत है जिसमें गुरमुख केवल धार्मिक लेबल नहीं बल्कि अहं के सतही दिखावे या खोखले रीति-रिवाजों के बजाय, बुद्धिमत्ता की ओर मुड़ना है।

बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥

सच्चे गुरु के बिना सही मार्ग नहीं मिलता। सत्य को आध्यात्मिक दिशा-सूचक बनाए बिना, आत्म-खोज की यात्रा छिपी रहती है। हमारे अस्तित्व की सच्ची समझ आत्म-चिंतन से उत्पन्न होती है जो अहंकार को मिटा कर, हमें सार्वभौमिक उपस्थिति की ओर ले जाती है। (५)(१)

तत्त्व: भक्त बेनी ऐसी स्पष्टता दिखाते हैं जो ऊपरी दिखावे को चीरकर गहरे सच को सामने लाती है। वह उस दूरी को उजागर करते हैं जो तब पैदा होती है जब हम अपनी अंदरूनी ईमानदारी से भटक जाते हैं। हमें यह देखने के लिए प्रेरित किया जाता है कि कैसे हमारी जागरूकता ऐसे रूप ले सकती है जो हमारे असली स्वरूप से मेल नहीं खाते। यह बदलाव हमें दिखावे से हटकर वास्तविक उपस्थिति की ओर ले जाता है और नक़ल से हटाकर सच्ची पहचान दिखाता है। जो असहज लगता है, वह आत्म-चिंतन का दरवाज़ा खोल कर, हमें अधिक सच्चे अस्तित्व की ओर ले जा सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com